ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 215-216**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

वीर सावरकर का हिन्दुत्व दर्शन

डॉ0 बृजेश कुमार रजक
असि0 प्रोफेसर– राजनीति विज्ञान, बी.एन.के.बी. महाविद्यालय, अम्बेडकरनगर (उ0प्र0) भारत

Received-01.06.2026, Revised-08.06.2026, Accepted-14.06.2026, **E-mail:brijeshmamata086@gmail.com**

सारांशः भारत के क्रांतिकारी विचारक, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, समाजसुधारक, कवि, दूरदर्शी नेता विनायक दामोदर सावरकर का जन्म 28 मई 1883 को भगुर गाँव, जिला नासिक, बम्बई में हुआ था। वीर सावरकर के नाम से प्रसिद्ध विनायक दामोदर ने हिन्दू राष्ट्रवाद की राजनीतिक विचारधारा "हिन्दुत्व" को विकसित किया। सावरकर ने हिन्दू धर्म से विचलित–परिवर्तित हिन्दुओं के हिन्दू धर्म में वापसी हेतु सतत प्रयास करते रहे। उन्होंने आन्दोलन के द्वारा सामूहिक "हिन्दू" पहचान बनाने हेतु "हिन्दुत्व" शब्द प्रचलित किया। उनके राजनीतिक दर्शन में मानवतावाद, यथार्थवाद, तर्कवाद और प्रत्यक्षवाद के विचार परिलक्षित होते हैं।

कुंजीभूत शब्द– वीर सावरकर का हिन्दुत्व दर्शन ,क्रांतिकारी विचारक, साहित्य, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, समाजसुधारक, कवि, दूरदशी।

हिन्दुत्व– हिन्दुत्व शब्द का प्रथम प्रयोग 1892 में चन्द्रनाथ बसु ने किया। तत्पश्चात 1923 में इसे पूरे भारत में प्रसारित और लोकप्रिय बनाने का कार्य विनायक दामोदर दास सावरकर ने किया। हिन्दुत्व एक सनातन विचार है, जो सर्वे भवन्तु सुखिनः और वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को दृढ़ बनाता है। वर्तमान में सभी धर्म–सम्प्रदाय व संस्कृतियों के मूल में हिन्दुत्व और सनातन संस्कृति की झलक देखी जा सकती है। हिन्दुत्व और हिन्दू धर्म अत्यन्त समृद्ध है जो अनेकों विविधताओं को अपने अन्दर समेटे हुए है। हिन्दुत्व ऐसा धर्म है, जहाँ मानव के साथ प्रकृति के सहअस्तित्व को भी मान्यता दी गयी है। अपने नियमित प्रार्थना में ''प्राणियों में सद्भावना, और ''विश्व के कल्याण'' की कामना करते हैं।

भारतीय सांस्कृतिक मनीषा का सनातन स्वरूप है। हिन्दुत्व है। हिन्दुत्व यह मानता है कि सत्य केवल एक है, सिर्फ नाम अनेक है। प्रकृति जति जगत को विषयता में भी नित्य समता का दर्शन करना हिन्दुत्व का प्राणतत्व है। यह राष्ट्रबोध का समर्थक और व्यक्ति के साथ ही साथ समष्टि के विकास की पक्षधर है।

वैदिक एवं श्रमण परम्परा का प्रतिपाद्य मानव–कल्याण है। वैदिक ऋषि '' संगछध्वं संवदध्वं एवं वसुधैव कुटुम्बकम् का गायन करता है तो श्रमण परम्परा का विस्तार ''प्राणीनां आर्तनाशनम्'' के रूप में परिलक्षित होता है। इस विशिष्ट परिवेश में पुष्पित–पल्लवित हिन्दुत्व का जीवन दर्शन अपनी मूल प्रकृति में मानवतावादी है जिसके कण–कण में मानव–कल्याण की भावना है। दया, क्षमा, सहिष्णुता, परम दुखकातरता, ज्ञानपिपासा, बहुलतावाद आदि अनेकानेक तत्व हिन्दुत्व को विश्व–विशिष्ट बनाते हैं। सदियों से इस मार्ग पर चलती हुई भारतीय मानवता पूरे विश्व में समादृत रही है। हिन्दू धर्म की आत्मा हिन्दुत्व है जो किसी उपासना पद्धति से नहीं अपितु अनेकता में एकता से प्रतिबिम्बित होती है। मनुस्मृति के इस श्लोक से हिन्दुत्व की धारणा परिलक्षित होती हैः

धृति क्षमा दयोस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
धी विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।।

केरी ब्राउन के अनुसार– ''हिन्दुत्व एक विचार है, जो कि हर प्रकार के विश्वासों पर विश्वास करता है और धर्म, कर्म, अहिंसा, संस्कार व मोक्ष को मानता है और उनका पालन करता है। यह ज्ञान और स्नेह का मार्ग है।

हिन्दुत्व वैचारिक उत्कृष्टता का मापदण्ड है, जो उपासना पद्धति के आधार पर भेद नहीं करता। यह मानव मात्र के प्रति ही नहीं, अपितु प्राणि मात्र के प्रति संवेदनशील है। याज्ञवल्क्य स्मृति में धर्म की विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए कहा गया हैः

''अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
दानं दमो दया शान्तिः सर्वेषां धर्मसाधनम्'' (याज्ञवल्क्य स्मृति 1.122)

पद्म पुराण में भी धर्म के सार को देखने पर हिन्दुत्व की मूल भावना को देखा जा सकता हैः

श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चौवावधार्यताम् ।
आत्मनः प्रति कूलानि परेषाँ न समाचरेत (पद्मपुराण सृष्टि 19.357)

गोस्वामी तुलसीदास की पंक्ति हिन्दुत्व को बड़े सुन्दर ढंग से अभिव्यक्त करती हैः

''परहित सारिस धर्म नहि भाई, परपीड़ा सम नहिं अधमाई''।

अर्थात् दूसरों का कल्याण करता धर्म, और पीड़ा पहुँचाना अधर्म है। यही हिन्दुत्व का सार तत्व है।

वीर सावरकर के विचार –वीर सावरकर ने हिन्दू राष्ट्र की सांस्कृतिक तथा अवयवी एकता को स्वीकार किया। वे हिन्दू पुनरूथान के आदर्श भक्त और हिन्दुत्व की सांस्कृतिक श्रेष्ठता में विश्वास करते थे। उन्होंने हिन्दू–समाज के नैतिक तथा सामाजिक उत्थान पर विशेष बल दिया। सावरकर हिन्दुत्व और हिन्दू राष्ट्र के प्रबल समर्थक थे तथा हिन्दू सांस्कृतिक और दार्शनिक उपलब्धियों में उन्हें गहन विश्वास था। उनका यौवन जेल में बीता। उन्होंने हिन्दुओं को संगठित करने तथा उनमें हिन्दू राष्ट्रवाद की भावनाएं भरने का निरन्तर प्रयास किया। वस्तुतः वे हिन्दुओं का पुनरूत्थान करना उनके जीवन में चरम लक्ष्य था।

वीर सावरकर ने कहा कि हिन्दुओं का वास्तविक विकास तभी सम्भव है जब वे संगठित हो तथा परस्पर एक सूत्र में बंधे हों। हिन्दुत्व का विकास तभी सम्भव है जब हिन्दुओं के हितों की रक्षा की जाए। हिन्दुओं में उत्तरदायित्व की भावना का विकास कर उनमें परस्पर बन्धुत्व तथा विश्वास की भावना जाग्रत किया जाए।

सावरकर ने अपनी पुस्तक ''हिन्दुत्व'' में हिन्दू की परिभाषा इस प्रकार की हैः ''हिन्दू वह धर्म है कि जो सिन्धु नदी से समुद्र तक भारतवर्ष को अपनी पितृभूमि और पुण्यभूमि मानता है।'' सावरकर ने हिन्दुत्व अथवा हिन्दू होने की तीन कसौटियां बताईः

1. राष्ट्र, अथवा प्रादेशिक एकता– सावरकर का विश्वास था कि एक हिन्दू के मन में सिन्धु से ब्रह्मपुत्र तक और हिमालय से कन्याकुमारी तक सम्पूर्ण भौगोलिक प्रदेश के प्रति अनुराग होना स्वाभाविक है।

2. जाति अथवा रक्त सम्बन्ध– सावरकर ने किसी जातिगत या नस्लगत श्रेष्ठता का सिद्धान्त प्रतिपादित नहीं किया, बल्कि इस तथ्य पर बल दिया कि सदियों के एतिहासिक जीवन के फलस्वरूप हिन्दुओं में ऐसी जातिगत विशेषताएँ विकसित हो गई हैं जो जर्मनों, चीनियों अथवा इथीयोपियाइयों से भित्र हैं।

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

3. संस्कृति– जिस व्यक्ति को हिन्दू सभ्यता और संस्कृति पर गर्व है, वही हिन्दू है। इस प्रकार सावरकर ने इन तीनों आधारभूत तत्त्वों को हिन्दू राष्ट्रवाद के विकास में अनिवार्य बताया। उन्होंने कांग्रेस द्वारा प्रतिपादित 'भारतीय राष्ट्रवाद' के विचार में असहमति प्रकट की जिसके अनुसार राष्ट्रवाद मुख्यतः प्रादेशिक होता है।

अतः भारत में उत्पन्न और पोषित सभी व्यक्ति बिना जाति और भेदभाव का होना ही पर्याप्त है। वरन् प्रजाति, भाषाई, धार्मिक तथा अन्य प्रकार की एकता का होना स्वाभाविक है। यदि जनता पर प्रादेशिक राष्ट्रीयता थोपी जाए (जैसा कि पोलैण्ड और चौकोस्लोवाकिया में किया गया) तो राष्ट्र सही अर्थों में जीवित नहीं रह सकता है। वीर सावरकर का विचार है कि हिंदुत्व वह वस्तु है जिसे खोया नहीं जा सकता। हिंदुओं में सदियों से जो विशेषताएँ, प्रजाति तत्त्व विकसित हो चुके हैं, उनके आधार पर हिंदुत्व को अलग से पहचान सकते हैं और जाति खो देने के पश्चात भी वह विनष्ट नहीं हो सकता है। "भारतीय राष्ट्र" जैसी बात करना एक प्रवंचना है 'भारतीय राष्ट्र' जैसी अन्य कोई चीज न है और न कोई हो सकती है। यह देश सदैव से हिन्दू राष्ट्र ही रहा है और भविष्य में भी सदैव हिन्दू राष्ट्र ही रहेगा।"

मुस्लिमों के प्रति द्रष्टिकोण– सावरकर ने कहा कि "मुसलमान और ईसाई भारत को उस तरह से प्यार नहीं कर सकते जिस तरह हिन्दू करते हैं।" सावरकर हिंदुओं और मुसलमानों में प्रेम और सहिष्णुता का वातावरण देखना चाहते थे, लेकिन सावरकर कहते थे कि विदेशों से आई हुई जाति कर सकती है। भारत को उतना प्यार नहीं कर सकती, जितना इसी देश में जन्मी हुई जाति। सावरकर उन मुसलमानों के प्रति पूर्ण आदर रखते थे जिनके हृदय में भारत से प्रेम था, जो भारत के लिए उसी प्रकार मर–मिटने हेतु तत्पर थे जिस प्रकार कि हिन्दू। सावरकर ने यहाँ तक कहा कि मुसलमानों का भारत–भूमि के साथ कोई भावनात्मक सम्बन्ध नहीं है तथा उनके हृदय में भारत के प्रति प्रेम और श्रद्धा की वह सरिता प्रवाहित नहीं होती जो हिंदुओं में होती है। सावरकर का इस प्रकार का अभिमत हिंदुत्व के जोश की पराकाष्ठा थी कि मुसलमानों के बीच स्पष्ट रूप से कोई साम्य नहीं है। बहुसंख्यक मुसलमानों द्वारा हिंदुओं से सर्वथा पृथक एक मुस्लिम राज्य के निर्माण की मांग ने सावरकर के कड़वे विचारों को आधार प्रदान किया।

वीर सावरकर तुष्टिकरण की नीति में विश्वास नहीं करते थे। वे मुसलमानों के सहयोग का स्वागत करते थे लेकिन उन्हें यह भी विश्वास था कि स्वराज मुसलमानों के सहयोग के बिना भी प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने मुसलमानों से स्पष्ट रूप से कहा था कि ''यथा सामर्थ्य संघर्ष करते रहेंगे।" यदि तुम साथ देते हो तो तुमसे मिलकर संघर्ष करेंगे, यदि तुम साथ नहीं देते हो तुम्हारे बिना ही लड़ते रहेंगे और यदि तुम विरोध करोगे तो उस विरोध के बावजूद युद्ध जारी रखेंगे।

हिन्दुत्व और राष्ट्रवाद– वीर सावरकर ने हिंदुत्व और राष्ट्रवाद के बीच किसी प्रकार का विरोध नहीं माना। भारत हिंदुओं की पितृभूमि और पुण्यभूमि है, इसलिए विदेशी शासन को उखाड़ फेंकने के लिए राष्ट्रीय संघर्ष में सबसे अधिक आगे हिन्दू ही हैं, उन्हीं की प्रधानता है। सावरकर ने अपने हिंदुत्व में किसी प्रकार की संकीर्णता को स्थान नहीं दिया। उन्होंने हिन्दुओं को संगठित होने की प्रेरणा दी तथा हिन्दुओं में व्याप्त अस्पृश्यता का विरोध किया। हिन्दू मन्दिरों में अछूतों के प्रवेश का समर्थन करते हुए उन्होंने माना कि जिसे अपवित्र किया , वह ईश्वर नहीं है। मनुष्य के स्पर्श से अपने आपको अपवित्र मान लें। यह व्यवहार न तो हिन्दुत्व, अपितु सम्पूर्ण मानवता के मस्तक पर कलंक है।'' 1937 में सावरकर ने ब्राह्मणों, वैष्णवों, हरिजनों आदि में सहयोग की अपील करते हुए मार्मिक शब्दों की घोषणा की कि ''आज से मैं जातियों की उच्चता और नीचता में विश्वास नहीं करूंगा, मैं सबसे ऊंची और उससे नीची जातियों के बीच विभेद नहीं करूंगा, मैं किसी भी जाति के हिन्दू के साथ भोजन करने को उद्यत रहूंगा। मैं जन्म अथवा व्यवसाय से जाति में विश्वास नहीं करूंगा और आज से मैं अपने आपको केवल हिन्दू कहूंगा ब्राह्मण, वैश्य आदि नहीं।''

सावरकर ने मिश्रित विद्यालयों की स्थापना की बात की जिनमें अछूतों के बालक सवर्ण हिन्दू बालकों के साथ शिक्षा प्राप्त कर सकें। उनके प्रयत्नों के फलस्वरूप रत्नागिरि जिले में मिश्रित विद्यालय स्थापित हुए।

निष्कर्ष– सावरकर ने कहा कि जो व्यक्ति जितना अधिक सच्चा हिन्दू होगा, वह उतना ही अधिक देश–भक्त भी होगा। स्वतंत्र और स्वाधीन भारत के लक्ष्य की पूर्ति के लिए आवश्यक है कि हिन्दुत्व का विकास किया जाए। हिन्दुत्व में वह शक्ति है जो मानव सभ्यता को प्रकाश दे सकती है। सावरकर ने कहा कि यदि हिन्दुओं की जनसंख्या कम हो जायेगी और अन्य जातियों की जनसंख्या बढ़ जायेगी तो वह हिन्दुत्व के लिए अहितकर होगा।

सावरकर के हिंदुत्व दर्शन के अध्ययन में हम कह सकते हैं कि उन्होंने राजनीति का हिन्दूकरण कर दिखाया। वीर सावरकर ने हिन्दू पुनर्जागरण में आस्था रखते थे। हिन्दू सामाजिक संगठन में प्रवेश करके बुराइयों को मुक्त करने के आकांक्षी थे, मुसलमानों के प्रति उनका कोई दुर्भाव नहीं था। उनकी घृणा सिर्फ मुस्लिमलीग जैसे कट्टरपंथी धार्मिक सम्प्रदाय के प्रति थी। उनका विरोध ब्रिटिश शासन की 'फूट डालो और राज करो' की नीति से था। सावरकर चाहते थे कि समानता की चाह रखने वाले मुसलमान देश के विभाजन की मांग त्याग कर संगठित और शक्तिशाली भारत के निर्माण में सहयोगी बनें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. वी.पी. शर्मा, ''आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन''।
2. वीरेन्द्र प्रकाश, ''हिन्दुत्व का रहस्योद्घाटन'', राजकमल प्रकाशन, 2000.
3. डॉ. वी.पी. शर्मा, ''आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन''।
4. डॉ. कीर, ''सावरकर एण्ड हिज टाइम्स'' बाम्बे इण्डिया वर्क्स, 1950.

*****